jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 10:12 PM Page 30

गया।

अब नानाजी एक साथ तीन मोर्चों पर सक्रिय थे। एक ओर उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान को पी. परमेश्वरन् के निर्देशन में एक प्रभावी बौद्धिक केन्द्र बनाने की प्रक्रिया आरंभ की। दूसरे, उन्हें जनता पार्टी के भीतर प्रारंभ हुए सत्ता-संघर्ष का शमन कर जनता पार्टी सरकार को जे.पी. के सपनों की पूर्ति का माध्यम बनाना था। तीसरे, उन्हें अपने लिए गैर राजनीतिक रचनात्मक कार्य की भूमिका खोजनी थी। राजनीति के गिरते चरित्र के प्रति वितृष्णा उनके मन में पहले ही पैदा हो चुकी थी। आपातकालीन दमन की भट्टी में तप कर निकले जनता पार्टी की नेतृत्व में सत्ता के लिए छीना-छपटी और षड्यंत्रों को देखकर वे राजनीति के प्रति पूरी तरह निराश हो गए। उनका मन जल्दी से जल्दी

तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई, तब जनसंघ के नेता लालकृष्ण आडवाणी व समाजवादी नेता मधु लिमये के साथ नानाजी

राजनीति से बाहर निकलने के लिए छटपटाने लगा। उन्होंने देखा कि प्रधानमंत्री बनने के लिए गृहमंत्री चरण सिंह अपनी ही सरकार के विरुद्ध षडयंत्र कर रहे हैं। 1973 तक चरण सिंह से घृणा करने वाले राजनारायण अब स्वयं को उनका हनुमान बता रहे थे। केवल 32 सीटें पाने वाली सोशलिस्ट पार्टी के नेता मधु लिमये की एक मात्र चिन्ता यह थी कि कहीं जनसंघ और संघ अपने विशाल संगठन के बल पर जनता पार्टी और केन्द्र सरकार पर कब्जा न कर लें। इसलिए पहले दिन से ही उन्होंने संघ और जनसंघ के विरुद्ध षडयंत्री राजनीति आरंभ कर दी। कभी वे संघ को विसर्जित करने की बात करते तो कभी संघ को जनता पार्टी में विलय की मांग उठाते। अंत में उन्होंने जनसंघ के विरूद्ध दोहरी सदस्यता का मुद्दा खड़ा कर दिया। नानाजी को गहरा धक्का लगा, जब चरण सिंह को प्रधानमंत्री बनाने के लिए राजनारायण ने संजय गांधी से गुप्त मुलाकातें शुरू कर दी। जिन चरण सिंह ने गृहमंत्री होते हुए भी इंदिरा गांधी को गिरफ्तार न करा पाने के लिए पूरी मोरारजी मंत्रीमंडल को 'नपुंसकों की टोली' घोषित कर दिया था, उन्हीं चरण सिंह ने प्रधानमंत्री बनने के लिए इंदिरा जी का सहारा ले लिया। जनता पार्टी की एकता एवं सरकार को बचाने की नानाजी ने जीतोड़ कोशिश की, पर सफल नहीं हुए। सत्ता के भूखे राजनीतिज्ञों ने जयप्रकाश के कंधों पर चढ़कर सत्ता पाई थी, उन्हीं जे.पी. की भी पूर्ण उपेक्षा आ आरंभ कर दी। जे.पी. पूरी तरह टूट गए थे। 1978 में ही उन्हें दिखने लगा कि जनता पार्टी और इंदिरा गांधी की सरकारों के चरित्र में कोई बुनियादी अंतर नहीं है। 1979 में जब जे.पी. रोगशय्या पर मृत्यु से जूझ रहे थे, तब चरण

दीनदयाल जी की जयंती पर अन्य दलों के नेताओं को अपने मंच पर लाने का माद्दा सिर्फ नानाजी में ही था